पापा की मूँछें

Author: Madhuri Purandare
Illustrator: Madhuri Purandare
Translator: Manohar Notani

PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर २

अनु को अपने पापा की बहुत सी चीज़ें अच्छी लगती हैं। उनकी लटकने वाली चमचम चमकतीं लालटेनें, उनके तले प्याज़ के करारे-करारे पकौड़े, काग़ज़ से जो प्यारे-प्यारे कछुए वे बनाते हैं, अनु को सब अच्छे लगते हैं। यही नहीं, सीढ़ियाँ भी वे उचक-उचक कर चढ़ते हैं। और फिर मामा से उनकी वे कुश्तियाँ, जो वे मज़े लेने के लिए आपस में लड़ते हैं। मेहमानों के आने पर, वे हमेशा उन्हें हँसाते रहते हैं!

अनु को अपने पापा की ये सारी चीज़ें अच्छी लगती हैं।
लेकिन क्या आप जानते हैं कि अनु को अपने पापा की कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा अच्छी लगती है?
पापा की मूँछें!

हर सुबह, जैसे ही उसके पापा दाढ़ी बनाना शुरू करते हैं, अनु भी उनके पास आकर बैठ जाती है। बड़े ध्यान से उन्हें दाढ़ी बनाते हुए देखती है। उसके पापा अपनी दो उँगलियों में एक छुटकी-सी कैंची पकड़े, कच-कच-कच... अपनी मूँछों को तराशने में जुट जाते हैं। और अनु है कि कहती जाती है, “थोड़ा बाएँ... अब थोड़ा-सा दाएँ... पापा नहीं ना! आप अपनी मूँछों को और छोटा मत कीजिए! आप ऐसा करेंगे तो मैं आपसे कट्टी हो जाऊँगी!”

पापा जब नहा कर बाहर निकलते हैं तो अनु एक छोटी कंघी से बड़ी सफ़ाई से उनकी मूँछों के बाल काढ़ती है।
इसके बाद, वह मूँछ की नोकों को अपनी उँगलियों की चुटकी में पकड़ कर उमेठ देती है!
बस फिर क्या, पापा की मूँछें दिखने लगती हैं - रोबीली और तन-तना-तन।
सो अनु भी तन जाती है, “लो, हो गया पापा! अब आप इसे बिगाड़ेंगे नहीं, ठीक है?”

अनु हमेशा सोचा करती है, पापा अगर एक अच्छा कुरता पहन लें, सिर पर एक पगड़ी रख अपनी कमर पर एक तलवार लटका लें और एक घोड़े पर सवार हो जायें, तो कितने शानदार लगेंगे पापा!

ठीक एक चश्मे वाले सैनिक की तरह!

सच बात तो यह है कि अनु को सारे मूँछ वाले आदमी अच्छे लगते हैं। जैसे कि उसकी दोस्त तुती यानि स्मृति के पापा।
ये मोटी-मोटी मूँछ है उनकी! मूँछें काढ़ने के लिए उन्हें एक अच्छे-खासे मोटे कंघे की ज़रूरत पड़ती है।
तुती के पापा टेनिस बहुत अच्छी खेलते हैं। लेकिन सच में, उन्हें तो एक पहलवान होना चाहिये था।
वे यदि एक चुन्नट डली पगड़ी पहन लें, और अपने कंधे पर एक बड़ी-सी गदा उठा लें, तो बहुत रोबीले दिखेंगे!

साहिल के पापा की मूँछ पेंसिल की लकीर सी पतली हैं। अनु सोचती है कि वे अपनी मूँछें भला इतनी पतली कैसे बनाते होंगे।
अगर वे एक काला टोप और एक लम्बा काला ओवरकोट पहन लें...अपनी आँखों पर एक काला चश्मा लगा लें, तो वे एकदम उस टीवी वाले जासूस की तरह लगेंगे जो सब चोरों को पकड़ लेता है!

लेकिन सबसे बढ़िया मूँछें तो, पास वाले मकान में रहने वाले उन दादाजी की हैं! ऐसा लगता है मानो एक बड़ा-सा सफ़ेद बादल आसमान से उतर कर उनकी नाक के नीचे रहने चला आया है! अब उनका मुँह जो है, उस बादल के पीछे छिपा रहता है।

अनु को दादाजी की चिन्ता होने लगी है... उस बादल के रहते वे खाना कैसे खा पाते होंगे भला?

अनु सोचती है कि उसकी नाक के नीचे क्यों कोई मूँछ नहीं उगती?
हर सुबह, वह अपना साबुन भिगोती है, ढेर सारा झाग बनाती है और फिर उससे अपनी तरह-तरह की मूँछें बनाती है।

“मेरी मूँछें सबसे अच्छी,” वह कहती है।
“एकदम झक सफेद, और मुलायम-मुलायम, है न?”

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: पापा की मूँछें is translated by Manohar Notani . The © for this translation lies with Pratham Books, 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'बाबाच्या मिश्या', by Madhuri Purandare . © Pratham Books , 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: Man trimming his moustache and little girl watching, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Little girl looking at man, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Little girl looking at man, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Man trimming his moustache and girl watching curiously, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Little girl playing with man's moustache, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Soldier riding a horse and girl watching, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Man playing tennis, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Man with hat and overcoat at night, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Old man gardening, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Girl lathering her face, by Madhuri Purandare © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पापा की मूँछें

(Hindi)

अनु को अपने पापा की क्या चीज़ सबसे अच्छी लगती है? उनकी मूँछें! असल में, अनु को मूँछ वाले सारे लोग अच्छे लगते हैं। अनु ने मूँछ देखी नहीं कि उसके मन में न जाने क्या-क्या मज़ेदार कल्पनाएँ उमड़ने लगती हैं।

This is a Level 2 book for children who recognize familiar words and can read new words with help.

PRATHAM BOOKS
storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!